



प्राकृतिक खेती से स्वावलंबन

दीपक राय*, ए.के. दुबे** और ए.डी. पाठक***

श्री गिरजा शंकर मौर्य, ग्राम भदेसरमऊ ब्लॉक-मलिहाबाद के निवास के पास 3 एकड़ (फसलों के लिए 2 एकड़ और आम के बागों के लिए 1 एकड़) कृषि भूमि है। खेती इनका पैतृक व्यवसाय है। अतः कृषि और पशुपालन से लगाव बचपन से रहा है। वह पहले परंपरागत खेती करते थे, परंतु इन्हें बेरोजगारी, पारंपरिक कृषि से अनुपयुक्त लाभ एवं खाद्य पदार्थों की गुणवत्ता में कमी आदि समस्याओं का सामना करना पड़ता था। इसके निदान के लिए इनके द्वारा कुछ प्रयास किये गये परंतु आशातीत सफलता नहीं मिली। इसी क्रम में दिसंबर, 2017 में लोक भारती संस्था द्वारा बाबा भीमराव अंबेडकर केंद्रीय विश्वविद्यालय, लखनऊ में प्राकृतिक खेती विषय पर 7 दिवसीय कार्यशाला आयोजित हुई, जिसमें इन्होंने भाग लिया। इसके बाद इस विधा को अपने प्रक्षेत्र पर उतारने का संकल्प लिया।

श्री गिरजा शंकर मौर्य ने प्राकृतिक खेती का प्रारंभ वर्ष 2018-19 में किया। इस विधा को अपने खेत के एक हिस्से पर 0.4 एकड़ में शुरू किया। सर्वप्रथम उसमें आम (चौसा प्रजाति) के 24 पौधों का 40×40 वर्ग फीट पर रोपण किया। उसी खेत में परंपरागत रूप में उगाई जाने वाली फसलें जैसे-धान, चना, आलू, मटर और लहसुन की खेती प्रारंभ की, जिससे कुल 32,800 रुपये प्राप्त हुये। दूसरे वर्ष (2019-20) उसी खेत में अमरूद (लखनऊ 49) के 40 पौधों का भी रोपण 40×20 वर्ग फीट पर किया और फसल के रूप में धान तथा गेहूं में चना और

मेथी का अंतःसस्यन किया। इससे कुल आय 21750 रुपये हुई, जो कि आशातीत नहीं थी। अतः तीसरे वर्ष (2020-21) इस प्राकृतिक खेती को लाभकारी बनाने के लिए उसमें बहुपरत फसल प्रणाली (मल्टीलेयर फार्मिंग) की स्थापना की। इसमें देसी केले की 40 पौध (40×20 वर्ग फीट) तथा नीबू की 10 पौध और नेपियर बहुवर्षीय चारा घास किनारे पर लगाई। उसी के साथ मूंग, उड़द, हल्दी, परवल, कुंदरू, लौकी और कढ़ू को भी उगाया। इसके लिए सर्वप्रथम उड़द और मूंग की छिटकवां विधि से बुआई की। इसके बाद उसमें मेड़ बनाकर उस पर हल्दी की बुआई की। किनारों पर परवल तथा कुंदरू की पौध लगा दी तथा खेत के किनारों पर लौकी और कढ़ू के पौधे रोपित कर दिये। इसमें से उड़द, मूंग की फली तोड़कर पौधे

को खेत में छोड़ दिया, जो अन्य फसलों के लिए नाइट्रोजन का स्रोत बना। इसके साथ ही हल्दी बड़ी हो जाने पर पूरी भूमि की सतह पर आच्छादन भी हो गया, जिससे खेत में खरपतवार की समस्या उत्पन्न नहीं हुई। इस फसल प्रणाली में फसल प्रबंधन के अंतर्गत फसल जमाव के बाद 15 दिनों के अंतराल पर जीवामृत की 15 लीटर मात्रा का 200 लीटर पानी में घोल बनाकर, प्रत्येक सिंचाई के साथ खेतों में प्रयोग किया एवं कीट प्रबंधन के लिए आवश्यकतानुसार दस पर्णी, ब्रम्हास्त्र, आग्नेयास्त्र की 30 मि.ली. मात्रा का प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव किया। खेत में खरपतवार प्रबंधन के लिए पुआल, आम की पत्ती और हल्दी की पत्ती की पलवार बिछाई गयी एवं फसल की मांग के अनुसार खेतों की निराई एव गुड़ाई की गयी। इससे कुल आय

*विषय वस्तु विशेषज्ञ (पौध सुरक्षा), केवीके;
अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केंद्र, *निदेशक,
भाकूअनुप-भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ
(उत्तर प्रदेश)

सफलता गाथा

सारणी 1. वर्ष 2020-21 में प्राकृतिक खेती के मॉडल की आर्थिकी (क्षेत्रफल: 0.4 एकड़)

फसल	क्षेत्रफल/पौध	फसल प्रबंधन	उत्पादन (क्विंटल)	कुल आय (रुपये)	व्यय (रुपये)	प्राकृतिक निवेश व्यय (रुपये)	शुद्ध लाभ (रुपये)
आम (चौसा)	24 पौध दूरी: 40×40 फीट	फसल जमाव के बाद 15 दिनों के अंतराल पर जीवामृत के 200 लीटर घोल का सिंचाई के साथ खेतों में प्रयोग एवं आवश्यकतानुसार दस पर्णों, ब्रम्हास्त्र, आग्नेयास्त्र की 300 मि.ली. मात्रा का 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव। पलवार: पुआल, आम की पत्ती और हल्दी की पत्ती। निराई एवं गुड़ाई फसल की मांग के अनुसार।	-	-	-	2380 प्रति वर्ष	-
अमरूद (लखनऊ-49)	40 पौध, दूरी: 20×40 फीट		-	-	-		-
नीबू*	किनारों पर 10 पौधरोपण		-	-	-		-
परवल*	220 पौध		8.0	24000	-		24000
कुन्दरु*	220 पौध		15	18000	-		18000
हल्दी	0.3		25	100000	23500		76500
उड़द	0.3		1.0	8000	1500		6500
कहू*	50 पौध		0.30	250	-		250
लौकी*	20 पौध		0.25	375	-		375
तोरई*	50 पौध		0.30	375	-		375
नेपियर* (बहुवर्षीय चारा घास)	0.05 (किनारों पर)	10	5000	-	5000		
कुल			156000.0	25000	2380		
कुल योग				156000	27380	128620	

सारणी 2. वर्ष 2021-22 में प्राकृतिक खेती मॉडल की आर्थिकी (क्षेत्रफल: 0.8 एकड़)

फसल	क्षेत्रफल	फसल प्रबंधन	उत्पादन (क्विंटल)	कुल आय (रुपये)	व्यय (रुपये)	प्राकृतिक निवेश व्यय (रुपये)	शुद्ध लाभ (रुपये)
आम (दशहरी)	25 पौध रोपण दूरी: 40×40 फीट	फसल जमाव के बाद 15 दिनों के अंतराल पर जीवामृत के 200 लीटर घोल का सिंचाई के साथ खेतों में प्रयोग एवं आवश्यकतानुसार दसपर्णों, ब्रम्हास्त्र, आग्नेयास्त्र की 300 मि.ली. मात्रा का 15 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव।				2380 प्रति वर्ष	
हल्दी+उड़द+मूंग+मक्का	0.8		40.0 (हल्दी बीज-10.0 हल्दी पाउडर-2.0 खड़ी हल्दी-20.0)	194000.0	26200.0		167800.0
			1.0	8000.0	1200.0		6800.0
अरहर का अंत: सस्यन			1.0	12000.0	1200.0		10800.0
			3.0	9000.0	1320.0		7680.0
		दाल :4.0	62000.0	6000.0	56000.0		
योग			285000.0	35920.0	2380.0		
कुल योग				285000.0	38300.0	249080.0	

1.56 लाख रुपये हुई और व्यय मात्र 27,380 रुपये हुआ, जिसमें से प्राकृतिक निवेश व्यय मात्र 2,380 रुपये हुआ और आय-व्यय का अनुपात 5.70 प्रतिशत पाया गया (सारणी-1)। इसी पद्धति से वर्ष 2021-22 में भी प्राकृतिक खेती की गई, जिससे वर्ष 2020-21 की तरह ही परिणाम मिला। इसमें आय-व्यय का अनुपात 4.94 प्रतिशत पाया गया।

इस उत्साहजनक परिणाम को देखते हुये श्री मौर्य ने अपने अन्य प्रक्षेत्र (क्षेत्रफल: 0.8 एकड़) पर भी इस विधि को अपनाया। इसमें वर्ष 2020-21 में सर्वप्रथम उसमें आम (चौसा प्रजाति) 25 पौध का 40×40 वर्ग फीट

पर रोपण किया। वर्ष 2021-22 में हल्दी, उड़द, मूंग, मक्का और अरहर का अंत:सस्यन किया। इसमें कुल व्यय 38,300 रुपये तथा आय 2,85,000 रुपये हुई और आय-व्यय का अनुपात 7.44:1 रहा (सारणी-2)।

श्री गिरजा शंकर जी कृषि उत्पादों को प्रसंस्करित करके बेचते हैं जैसे-हल्दी का पाउडर बनाकर, बीज रूप में, अरहर की दाल बनाकर, धान से चावल निकाल कर आदि। इसके कारण उपभोक्ता को तैयार प्राकृतिक उत्पाद उनके घर पर ही मिल जाता है। इससे इन्हें अधिक लाभ प्राप्त होता है।

श्री गिरजा विगत पांच वर्षों से इस खेती • मई 2023 • 54

प्राकृतिक खेती की विधा को अपनाए हुए हैं। इस पद्धति द्वारा कम लागत, अधिक लाभ के साथ मृदा के स्वास्थ्य पर भी सकारात्मक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। वर्ष 2017-18 और वर्ष 2021-22 में इनके खेतों के मृदा नमूनों के परीक्षण से यह ज्ञात हुआ कि ऑर्गेनिक कार्बन 0.42 प्रतिशत से बढ़कर 0.73 प्रतिशत; पी-एच 8.10 से घटकर 7.29; विद्युत चालकता 2.2 डेसी सीमेन्स मीटर से घटकर 0.06 डेसी सीमेन्स मीटर हो गई। इसके साथ ही मृदा में पोषक तत्वों, लाभकारी सूक्ष्मजीवों की संख्या और कंचुओं की संख्या में भी बढ़ोतरी हुई। ■